मुखपृष्ठ

साहित्यसुधा

साहित्यकारों की वेबपत्रिका

साहित्यकारों की रचना स्थली

वर्ष: 3, अंक 47, अक्टूबर(द्वितीय) , 2018

नया भारत-महाभारत

शंकर मुनि राय ("गड़बड़")

अर्जुन कृष्ण का इंतजार कर रहे है. वे दही चुराने निकले है गांव में. कहीं न गायें दिख रही हैं न ग्वालिन ही. यमुना उफान पर है. वहां भी चीर चुराने का चांस नहीं है. कुछ ग्वाले सेल्फी लेने में व्यस्त हैं और कुछ अपने साथियों के इंतजार में हैं. पुलिस के जवान तैनात हैं कि वहां कोई गड़बड़ी न हो. सब मिलाकर ब्रजमण्डल गुलजार लग रहा है.

इधर कुरूप क्षेत्र में शासन और दुशासन की सेना खड़ी हैं. धृतराष्ट्र की दोनों आँखें सही सलामत हैं फिर भी पट्टी बांधे हुए हैं. उन्हें डर है कि दुनिया की सच्चाई देखने से आँख में इन्फेक्शन होगा. संजय अपनी पुरानी टीवी को कबाड़ में डालकर सीधे मोबाइल को इंटरनेट से जोड़कर लाइव हैं.

धृतराष्ट्र : बोलो संजय ! क्या हो रहा हैं? कितनी देर हैं मारकाट शुरू होने में?

संजय : बाबा! घबड़ाते क्यों हो इतना! अभी दोनों सेनाएं मेकअप कर रही हैं. डायरेक्टर हस्तिनापुर में हैं, उसका नेटवर्क काम नहीं कर रहा हैं. जबतक वह लाइव नहीं होगा, महाभारत शुरू नहीं हो सकता.

धृतराष्ट्र : तबतक कुछ मजेदार बातें सुनाओ, आज बहुत बोरिंग लग रहा है!

संजय : ठीक है, साऊथ का सीन देखो! बरसाती तूफान ने प्रजा से भी अधिक भ्रष्टाचार किया है. कुछ इलाके जहाँ पानी चाहिए वहां सूखा है और जहाँ सूखा चाहिए वहां पर नौका विहार का आनंद लिया जा रहा है....

धृतराष्ट्र : प्रजा का क्या दोष है इसमें संजय? वह कैसे भ्रष्टाचारी हो गई?

संजय : अंधेश्वर ! उसका दोष यही है कि वह चुप है. जहाँ आरक्षण चाहिए वहां सूखा है और जहाँ नहीं चाहिए वहां के लोग पानी पानी हो रहे हैं. राहत कार्य में जो सैनिक लगे हैं उनकी दशा देख कर एक और महाभारत की तैयारी शुरू हो रही है.

धृतराष्ट्र : मंत्री लोग क्या कर रहे है आजकल ?

संजय : वही तो महाराज! वे सभी अपने बच्चों को लड़ाने की योजना बना रहे हैं.

धृतराष्ट्र : तो क्या अब मंत्री पुत्र भी योद्धा बनेगे? यह क्या होता है?

संजय : क्यों नहीं, हस्तिनापुर का यही तो इतिहास है. राजकुमार चाहे कैसा भी हो सिंहासन का सपना जरूर देखता है. इसके लिए चाचा , भाई, ताऊ, मामा सहित अपने चरित्र आदि सबकी हत्या करना ही तो राजधर्म माना गया है!

धृतराष्ट्र : (गंभीर होकर) संजय! इस नीति में बदलाव नहीं लाया जा सकता क्या?

संजय : बदलाव हुआ है महाराज !

धृतराष्ट्र : क्या हुआ है?

संजय : यही, कि जो एक बार भी, एक पल के लिए भी सिंहासन पर बैठ जायेगा उसका बेंडा पार!

मतलब "जनम-जनम मुनि जतन कराही, अंत राम कही पावत नाहीं." अर्थात सरकारी सैनिक तीस-चालीस साल की नौकरी करके जो लाभ (पेंशन) नहीं पा रहे हैं वह लाभ एक दिन कुर्सियाने के बाद राजकुमार लोग पा रहे हैं.

श्रीकृष्ण उवाच : हे पार्थ! युद्ध नीति को लात मारो! इस नीति से तुझे न तो कोई आसन मिलनेवाला है न ही सिंहासन, दरबान का स्टूल भी नहीं. जाओ अपने समस्त भाइयों के साथ हस्तिनापुर की किसी राजनीतिक नाली में कूदकर सुसाइड कर किसी निम्न योनि में अवतार लो अनेकानेक कुर्सियां तुम्हारा इंतजार कर रही हैं!

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें